Class XII Session 2025-26
Subject - Hindi Core
Sample Question Paper - 4

निर्धारित समय: 3 घंटे **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य निर्देश:

- निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए :-
- यह प्रश्न-पत्र तीन खण्डों में विभाजित है।
- खंड - क में अपठित बोध पर आधारित प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- खंड - ख में पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- खंड - ग में पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

खंड क (अपठित बोध)

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (10)** **[10]**

लोकतंत्र के तीनो पायों-विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका का अपना-अपना महत्त्व है, किंतु जब प्रथम दो अपने मार्ग या उद्देश्य के प्रति शिथिल होती है या संविधान के दिशा-निर्देशों की अवहेलना होती है, तो न्यायपालिका का विशेष महत्त्व हो जाता है। न्यायपालिका ही है, जो हमें आईना दिखाती है, कितु आईना तभी उपयोगी होता है जब उसमें दिखाई देने वाले चेहरे की विद्रूपता को सुधारने का प्रयास हो। सर्वोच्च न्यायालय के अनेक जनहितकारी निर्णयों को कुछ लोगो ने न्यायपालिका की अतिसक्रियता माना, पर जनता को लगा कि न्यायालय सही है। राजनीतिक चश्मे से देखने पर भ्रम की स्थिति हो सकती है।

प्रश्न यह है कि जब संविधान की सत्ता सर्वोपरि है, तो उसके अनुपालन में शिथिलता क्यों होती है? राजनीतिक दलगत स्वार्थ या निजी हित आड़े आ जाता है और यही भ्रष्टाचार को जन्म देता है। हम कसमें खाते हैं और जनकल्याण की ओर कदम उठाते हैं, आत्मकल्याण के ऐसे तत्त्वो से देश को, समाज को सदा खतरा रहेगा। अतः जब कभी कोई न्यायालय ऐसे फैसले देता है, जो समाज कल्याण के हों और राजनीतिक ठेकेदारों को उनकी औकात बताते हों, तो जनता को उसमें आशा की किरण दिखाई देती है। अन्यथा तो वह अंधकार मे जीने को विवश है ही।

(i) न्यायपालिका का विशेष महत्व कब हो जाता है? (1)

क) जब विधायिका और कार्यपालिका अपने मार्ग से भटक जाती है

ख) जब न्यायपालिका निष्क्रिय हो जाती है

ग) जब संविधान बदल जाता है

घ) जब जनता के पास न्याय नहीं होता

(ii) सर्वोच्च न्यायालय के जनहितकारी निर्णयों को किसने न्यायपालिका की अतिसक्रियता माना? (1)

क) जनता ने

ख) न्यायपालिका ने

ग) कुछ लोगों ने

घ) विधायिका ने

(iii) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए - (1)

कथन (I): न्यायपालिका का महत्त्व तब और बढ़ जाता है जब विधायिका और कार्यपालिका अपने कर्तव्यों में शिथिल हो जाती हैं।

कथन (II): सर्वोच्च न्यायालय के सभी निर्णय जनता की दृष्टि में सही माने जाते हैं।

कथन (III): न्यायपालिका के कुछ फैसलों को जनहितकारी माना गया है।

कथन (IV): राजनीतिक स्वार्थ संविधान के अनुपालन में शिथिलता का कारण बन सकते हैं।

गद्यांश के अनुसार कौन-सा/से कथन सही हैं?

क) केवल कथन (I), (III) और (IV) सही हैं।

ख) केवल कथन (II) और (IV) सही हैं।

ग) केवल कथन (I) और (II) सही हैं।

घ) केवल कथन (II), (III) और (IV) सही हैं।

(iv) सर्वोच्च न्यायालय के जनहितकारी निर्णयों को जनता ने कैसे माना? (1)

(v) जब संविधान की सत्ता सर्वोपरि है, तो उसके अनुपालन में शिथिलता क्यों होती है? (2)

(vi) न्यायालय के ऐसे फैसलों का महत्व क्या है जो समाज कल्याण के हों? (2)

(vii) न्यायपालिका का आईना दिखाने का क्या महत्व है? (2)

2. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (8)** **[8]**

सहता प्रहार कोई विवश, कदर्य जीव
जिसकी नसों में नहीं पौरुष की धार है।
करुणा, क्षमा हैं वीर जाति के कलंक घोर
क्षमता क्षमा की शूरवीरों का शृंगार है।
प्रतिशोध से हैं होती शौर्य की शिखाएँ दीप्त
प्रतिशोध-हीनता नरों में महापाप है,
छोड़ प्रीति-वैर पीते मूक अपमान वे ही
जिनमें न शेष शूरता का वह्नि-ताप है
जेता के विभूषण सहिष्णुता-क्षमा हैं किंतु
हारी हुई जाति की सहिष्णुता अभिशाप है।
सेना साजहीन है परस्व हरने की वृत्ति
लोभ की लड़ाई क्षात्र धर्म के विरुद्ध है
चोट खा परंतु जब सिंह उठता है जाग
उठता कराल प्रतिशोध हो प्रबुद्ध है
पुण्य खिलता है चंद्रहास की विभा में तब
पौरुष की जागृति कहाती धर्मयुद्ध है।

i. **(i) निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर उचित विकल्प का चयन कीजिए: (1)**

काव्य के अनुसार, वीरता का शृंगार क्या है?

I. करुणा और क्षमा

II. सहिष्णुता और सहनशीलता

III. क्षमता और क्षमा

IV. प्रतिशोध और जागृति

विकल्प:

क) केवल I सही है।

ख) केवल II सही है।

ग) केवल III सही है।

घ) केवल IV सही है।

ii. **'प्रतिशोध से हैं होती शौर्य की शिखाएँ दीप्त' का क्या अर्थ है? (1)**

क) प्रतिशोध से शौर्य बढ़ता है

ख) प्रतिशोध शौर्य को कमजोर करता है

ग) प्रतिशोध शौर्य की शिखाओं को बुझाता है

घ) प्रतिशोध और शौर्य में कोई सम्बन्ध नहीं है

iii. **कविता में 'हारी हुई जाति की सहिष्णुता अभिशाप है' का क्या संदर्भ है? (1)**

कॉलम 1	कॉलम 2
I. वीरता का प्रतीक	1. पौरुष की जागृति
II. हारी हुई जाति की सहिष्णुता	2. अभिशाप
III. धर्मयुद्ध की पहचान	3. क्षमता और क्षमा

क) I - (1), II - (2), III - (3)

ख) I - (3), II - (2), III - (1)

ग) I - (2), II - (1), III - (3)

घ) I - (1), II - (3), III - (2)

iv. **क्षमा कब कलंक और कब शृंगार हो जाती है? (1)**

v. **प्रतिशोध किसे कहते हैं? वह कब आवश्यक होता है? (2)**

vi. **सहिष्णुता को विभूषण और अभिशाप दोनों क्यों माना गया? (2)**

खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर)

3. **दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए।** **[6]**

  i. **पिंजरे से निकली चिड़िया** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए। **[6]**

  ii. **पुस्तकें पढ़ने की ख़त्म होती आदत** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए। **[6]**

  iii. **बढ़ती जनसंख्या की समस्या** विषय पर निबंध लिखिए। **[6]**

4. **निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर, किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए(2 X 4 = 8)** **[8]**

  i. यह अवसर खो देंगे? पंक्ति का क्या तात्पर्य है? **कैमरे में बंद अपाहिज** कविता के आधार पर बताइए। **[2]**

  ii. भगत जी के बारे में लेखक का क्या विचार है? बाज़ार दर्शन पाठ के आधार पर बताइये। **[2]**

  iii. **पहलवान की ढोलक** पाठ के आधार पर बताइए कि लुट्टन सिंह को राज पहलवान की पदवी कैसे मिली। **[2]**

  iv. **कविता के बहाने** कविता के संदर्भ में चिड़िया और कविता के संबंध का आधार स्पष्ट कीजिए। **[2]**

  v. भोर का नभ **[2]**

  राख से लीपा हुआ चौका

  (अभी गीला पड़ा है)

  नयी कविता में कोष्ठक, विराम चिह्नों और पंक्तियों के बीच का स्थान भी कविता को अर्थ देता है। उपर्युक्त पंक्तियों में कोष्ठक से कविता में क्या विशेष अर्थ पैदा हुआ है? समझाइए।

5. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (4 X 2 = 8)** **[8]**

  i. विशेष लेखन के लिए प्रयुक्त भाषा शैली कैसी होनी चाहिए? **[4]**

  ii. समाचार लेखन की शैली का विस्तार से वर्णन करते हुए लिखिए कि यह शैली समाचार-लेखन की मानक शैली कैसे बनी। **[4]**

  iii. सेक्शन ऑफीसर वाई.डी. पंत के अपने सहकर्मियों से संबंध तथा उनके कार्यालयी अनुभवों का वर्णन कीजिए। **[4]**

खंड- ग (आरोह भाग - 2 एवं वितान भाग-2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)

6. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ,

फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ;

कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ।
मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ

i. काव्यांश में कवि किसका भार लिए फिरता है?

क) घर तथा परिवार का
ख) अपने कार्यालय का
ग) संसार का
घ) आस-पड़ोस का

ii. काव्यांश के अनुसार कवि सबको क्या बाँट रहा है?

क) खुशियाँ
ख) आशा
ग) दुःख
घ) प्रेम

iii. कवि अपने जीवन में किस सुरा का पान करता है?

क) ईष्य्या-द्वेष
ख) उत्साह-उमंग
ग) स्नेह
घ) सभी विकल्प सही हैं

iv. कवि ने किसका ध्यान नहीं करने की बात की है?

क) संसार के स्वरूप की
ख) संसार की समर्थता की
ग) संसार के बंधनों की
घ) संसार की भाव प्रधानता की

v. कवि के अनुसार संसार में किन लोगों को प्रतिष्ठा प्राप्त होती है?

क) संसार के हित में कार्य करने वालों को
ख) संसार के लिए उच्च साहित्य रखने वालों को
ग) संसार की झूठी प्रशंसा न करने वालों को
घ) संसार का झूठा गुणगान करने वालों को

7. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[6]**

i. **बगुलों के पंख** कविता का प्रतिपाद्य बताइए। **[3]**

ii. **धूत कहौ, अवधूत कहौ** छंद में तुलसीदास ने समाज पर अपना क्षोभ कैसे व्यक्त किया है? **[3]**

iii. कविता को **फूल के बहाने** से क्या माना गया है? स्पष्ट कीजिए। **[3]**

8. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[4]**

i. **सबसे तेज़ बौछारें गयीं, भादो गया** के बाद प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने दिखाया है, उसका वर्णन अपने शब्दों में करें। पतंग कविता के आधार पर बताइए। **[2]**

ii. **कैमरे में बंद अपाहिज** कविता से आपकी राय में अपंगों के प्रति कैसा व्यवहार होना चाहिए? **[2]**

iii. **अशनि-पात से शापित उन्नत शत-शत वीर** पंक्ति में किसकी ओर संकेत किया गया है? **बादल राग** कविता के आधार पर बताइए। **[2]**

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

यह विडंबना की ही बात है कि इस युग में भी जातिवाद के पोषकों की कमी नहीं है। इसके पोषक कई आधारों पर इसका समर्थन करते हैं। समर्थन का एक आधार यह कहा जाता है कि आधुनिक सभ्य समाज 'कार्य-कुशलता' के लिए श्रम-विभाजन को आवश्यक मानता है, और चूँकि जाति-प्रथा भी श्रम-विभाजन का ही दूसरा रूप है इसलिए इसमें कोई बुराई नहीं है। इस तर्क के संबंध में पहली बात तो यही आपत्तिजनक है कि जाति-प्रथा श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिक-विभाजन का भी रूप लिए हुए है।

i. लेखक किस विडंबना की बात कह रहा हैं?

क) कार्य-कुशलता का अभाव
ख) बेरोजगारी

ग) जातिवाद को बढ़ावा देना | घ) सभ्य समाज का अभाव

ii. जातिवाद के पोषक अपने समर्थन में क्या तर्क देते हैं?

क) कार्य कुशलता | ख) श्रमिक विभाजन

ग) सभ्य समाज | घ) श्रम-विभाजन

iii. लेखक क्या आपत्ति दर्ज कर रहा है?

क) श्रम विभाजन | ख) श्रमिकों का अनादर

ग) श्रम का अभाव | घ) श्रमिक विभाजन

iv. जातियाँ किस आधार पर विभाजित है?

क) पद | ख) धर्म

ग) नाम | घ) कर्म

v. यह गदयांश किस पाठ से अवतरित है?

क) श्रम विभाजन और जातिप्रथा | ख) बाजार दर्शन

ग) नमक | घ) शिरीष के फूल

10. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[6]**

i. लुट्टन के पक्ष में न तो राजमत था और न ही बहुमत, फिर भी उसे कुश्ती में विजय प्राप्त हुई। क्यों? **[3]**

ii. **भक्तिन** पाठ के आधार पर पंचायत के न्याय पर टिप्पणी कीजिए। **[3]**

iii. आजकल अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में भारतीय फूलों की बहुत माँग है। बहुत से किसान साग-सब्ज़ी व अन्न उत्पादन छोड़ फूलों की खेती को ओर आकर्षित हो रहे हैं। इसी मुद्दे को विषय बनाते हुए वाद-वाद प्रतियोगिता का आयोजन करें। **[3]**

11. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[4]**

i. बाज़ार दर्शन निबंध उपभोक्तावाद एवं बाज़ारवाद की अंतर्वस्तु को समझाने में बेजोड़ है।-उदाहरण देकर इस कथन पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए। **[2]**

ii. **काले मेघा पानी दे** पाठ के आधार पर जीजी के तर्कों के आधार पर त्याग के स्वरूप का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। **[2]**

iii. आदर्श समाज के तीन तत्त्वों में से एक **भ्रातृता** को रखकर लेखक ने अपने आदर्श समाज में स्त्रियों को भी सम्मिलित किया है अथवा नहीं? आप इस **भ्रातृता** शब्द से कहाँ तक सहमत हैं? यदि नहीं तो आप क्या शब्द उचित समझेंगे/समझेंगी? **[2]**

12. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[10]**

i. यशोधर बाबू के व्यक्तित्व की तीन प्रमुख विशेषताएँ लिखते हुए समझाइए कि नई पीढी के लिए इन्हें अपनाना क्यों उपयुक्त है। **सिल्वर वैडिंग** के आधार पर लिखिए। **[5]**

ii. मंत्री नामक अध्यापक पर टिप्पणी कीजिए। **[5]**

iii. सिंधु सभ्यता मूलतः खेतिहर और पशुपालक सभ्यता थी। कैसे? **अतीत में दबे पाँव** पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। **[5]**

उत्तर

खंड क (अपठित बोध)

1. (i) क) जब विधायिका और कार्यपालिका अपने मार्ग से भटक जाती है

(ii) ग) कुछ लोगों ने

(iii) क) केवल कथन (I), (III) और (IV) सही हैं।

(iv) जनता ने सर्वोच्च न्यायालय के जनहितकारी निर्णयों को सही माना।

(v) संविधान के अनुपालन में शिथिलता इसलिए होती है क्योंकि राजनीतिक दलगत स्वार्थ या निजी हित आड़े आ जाते हैं, जो भ्रष्टाचार को जन्म देते हैं।

(vi) न्यायालय के ऐसे फैसलों का महत्व यह है कि वे समाज कल्याण के हों और राजनीतिक ठेकेदारों को उनकी औकात बताते हों, जिससे जनता को आशा की किरण दिखाई देती है।

(vii) न्यायपालिका का आईना दिखाने का महत्व यह है कि वह समाज को उसकी विद्रूपता को सुधारने का अवसर प्रदान करता है।

2. i. ग) केवल III सही है।

ii. क) प्रतिशोध से शौर्य बढ़ता है

iii. ख) I - (3), II - (2), III - (1)

iv. क्षमा असहाय होकर करने पर कलंक और क्षमतावान होने पर करने से श्रृंगार हो जाती है।

v. प्रतिशोध किसी के प्रति बदले की भावना को कहते हैं, यह आत्मसम्मान की रक्षा हेतु आवश्यक होता है।

vi. विजयी होकर क्षमा करना विभूषण है और पराजित होकर सहष्णिुता दिखाना अभिशाप है।

खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर)

3. दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए।

(i) **'पिंजरे से निकली चिड़िया'**

मूल रूप से ‘स्वतंत्रता’ कैद न होने या कैद में न रहने की स्थिति है, और बिना किसी उत्पीड़न के अपनी इच्छानुसार कार्य करने या बोलने का अधिकार है। जब हम किसी चिड़िया को पिंजरे में डालते हैं, तो मानो हम उसकी स्वतंत्रता छीन लेते हैं, क्योंकि जिस तरह हमें आज़ादी पसंद होती है, उसी तरह चिड़ियों को भी आज़ादी पसंद होती है।

वास्तव में, चिड़ियों का मूल अस्तित्व पिंजरे में न होकर, बाहरी प्राकृतिक वातावरण में है। धर्मशास्त्रों में भी पक्षियों को दाना खिलाना पुण्य का काम माना गया है। कभी-कभार पिंजरे में कैद चिड़ियों की मूक वेदना या चहचहाहट भी मानो इस तरह से प्रकट होती है कि जैसे वह हमसे कह रही हों कि हमें पिंजरे से बाहर निकालो, पिंजरा स्वर्ण का ही क्यों न हो, खाने को कीमती भोजन ही क्यों न परोसा जाए, लेकिन हमें स्वंत्रता ही प्यारी है। हम अपने कोमल पंखों के दम पर उड़ते-उड़ते दूर क्षितिज तक पहुँचना चाहते हैं। अपना आशियाना खुद बनाना चाहते हैं और अपने भोजन की तलाश भी खुद से करना चाहते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि चिड़िया भी खुले आकाश में विचरण करना चाहती हैं। अपने परों के सहारे उड़ान भरना चाहती हैं। चिड़ियों के लिए पिंजरा जेल के समान होता है। पिंजरे में कैद पक्षी अपना प्राकृतिक स्वभाव, उड़ना आदि सब भूलने लगते हैं। फिर धीरे-धीरे पिंजरे में ही दम तोड़ने लगते हैं। इसलिए **चिड़िया को पिंजरे से आज़ाद करना ही अपने मानव होने का प्रमाण देना है।**

(ii) **‘पुस्तकें पढ़ने की ख़त्म होती आदत’**

भाग दौड़ भरी ज़िंदगी में समय का अभाव तथा सूचना क्रांति और दूरदर्शन के प्रभाव से पुस्तकें पढ़ने की आदत निरन्तर कम होती जा रही है। युवा पीढ़ी के बीच ई-बुक्स, ऑडियो बुक्स एवं मनोरंजन के अन्य तकनीकी साधन का प्रचलन तेज़ी से बढ़ रहा है। परिणामस्वरूप, पुस्तकों का अस्तित्व भी संकट में आने लगा है।

कागज़ की ये ख़ुशबू,
ये दोस्ती रूठने को है।
किताबों से इश्क़ करने की,
ये आख़िरी सदी है शायद।

वास्तव में, पुस्तकें पढ़ना मस्तिष्क के लिए वैसा ही महत्व रखता है, जैसा व्यायाम का महत्व शरीर के लिए होता है। पुस्तकें हमारी सबसे अच्छी दोस्त और मार्गदर्शक होती हैं। पुस्तकें दुनिया को देखने की एक ख़ूबसूरत खिड़की होती हैं। पुस्तकों से गुज़रना मानो दुनिया के श्रेष्ठ अनुभवों से गुज़रना है। पुस्तकें पढ़ने से हमारे व्यक्तित्व में गुणात्मक परिवर्तन आता है।

पुस्तकें पढ़ने की आदत हमें इसलिए भी करनी चाहिए, ताकि कम्प्यूटर या लैपटॉप की अपेक्षा पुस्तकों के अध्ययन द्वारा समय के सदुपयोग के साथ-साथ आँखों की सुरक्षा भी की जा सके। अतः हमें तकनीकी सुविधाओं की नकारात्मकता को भी ध्यान में रखते हुए पुस्तकें पढ़ने की आदत को अपने व्यवहार में शामिल करना होगा। ताकि ज्ञान भंडारण के साथ-साथ पुस्तकें हमारी कल्पना शक्ति और रचनात्मकता को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो।

(iii) **बढ़ती जनसंख्या की समस्या**

परिचय: भारत में बढ़ती जनसंख्या एक गंभीर समस्या बन चुकी है। यह समस्या देश के विकास और संसाधनों पर भारी दबाव डाल रही है। इस निबंध में हम बढ़ती जनसंख्या के कारण, प्रभाव और समाधान पर चर्चा करेंगे।

बढ़ती जनसंख्या के कारण:

अशिक्षा: शिक्षा की कमी के कारण लोग परिवार नियोजन के महत्व को नहीं समझ पाते।

गरीबी: गरीब परिवारों में अधिक बच्चे होने की प्रवृत्ति होती है, क्योंकि उन्हें लगता है कि अधिक बच्चे होने से उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

स्वास्थ्य सेवाओं की कमी: स्वास्थ्य सेवाओं की कमी के कारण नवजात शिशुओं की मृत्यु दर अधिक होती है, जिससे लोग अधिक बच्चे पैदा करने की कोशिश करते हैं।

सामाजिक और धार्मिक मान्यताएँ: कुछ सामाजिक और धार्मिक मान्यताएँ भी अधिक बच्चों को जन्म देने को प्रोत्साहित करती हैं|

बढ़ती जनसंख्या के प्रभाव:

संसाधनों पर दबाव: बढ़ती जनसंख्या के कारण जल, भोजन, और ऊर्जा जैसे प्राकृतिक संसाधनों पर भारी दबाव पड़ता है।

बेरोजगारी: जनसंख्या वृद्धि के साथ रोजगार के अवसरों की कमी होती है, जिससे बेरोजगारी बढ़ती है।

गरीबी: अधिक जनसंख्या के कारण गरीबी की समस्या और भी गंभीर हो जाती है।

शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी: बढ़ती जनसंख्या के कारण शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में गिरावट आती है।

बढ़ती जनसंख्या के समाधान:

शिक्षा का प्रसार: शिक्षा के माध्यम से लोगों को परिवार नियोजन के महत्व के बारे में जागरूक किया जा सकता है।

स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार: स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार करके नवजात शिशुओं की मृत्यु दर को कम किया जा सकता है।

परिवार नियोजन कार्यक्रम: सरकार को परिवार नियोजन कार्यक्रमों को बढ़ावा देना चाहिए और लोगों को इसके लाभों के बारे में जागरूक करना चाहिए।

4. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर, किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए(2 X 4 = 8)

(i) प्रश्नकर्ता विकलांग से तरह-तरह के प्रश्न करता है। वह उससे पूछता है कि आपको अपाहिज होकर कैसा लगता है? ऐसे प्रश्नों के उत्तर प्रश्नकर्ता को तुरंत चाहिए। यह विकलांग के लिए सुनहरा अवसर है कि वह अपनी पीड़ा को समाज के समक्ष व्यक्त करे। ऐसा करने से उसे लोगों की सहानुभूति व सहायता मिल सकती है। यह पंक्ति मीडिया की कार्यशैली व व्यापारिक मानसिकता पर करारा व्यंग्य है।

(ii) भगत जी लेखक के पड़ोस में कई वर्षों से रहते हैं। वे चूर्ण बेचते हैं और उनका चूर्ण हाथों-हाथ बिक जाता है। चूर्ण से उन्होंने कभी भी छः आने से अधिक कमाई नहीं की, क्योंकि न तो वे चूर्ण को थोक में देते हैं और न ही व्यापारियों को बेचते हैं, जबकि उनका चूर्ण लेने के लिए सभी उत्सुक रहते हैं। कभी भी चूर्ण में लापरवाही नहीं हुई और इस चूर्ण से कोई बीमार नहीं हुआ। लेखक साधारण व्यक्ति भगत जी को श्रेष्ठ विद्वानों में सम्मिलित करता है।

(iii)लुट्टन सिंह को राज पहलवान की पदवी इसलिए मिली क्योंकि उन्होंने पहलवान की ढोलक पाठ में उम्दा कौशल दिखाया। उनकी मेहनत, दृढ़ संकल्प और निष्ठा ने उन्हें उत्कृष्टता की ऊँचाई तक ले जाया, जिसने उन्हें राज पहलवान का सम्मान और पदवी प्राप्त करने का अवसर दिया।

(iv)'कविता के बहाने' कविता में कविता को चिड़िया उड़ान भरने की संज्ञा दी गई है। इसका आधार यह है कि चिड़िया के द्वारा ही उड़ान मूल रूप में भरी जाती है। यह एक क्रिया है, जो चिड़िया के उन्मुक्त नैसर्गिक स्वभाव का परिचय देती है। मगर कवि ने इसे कल्पना के रूप में मानसिक उड़ान मानकर कविता से जोड़ दिया है। चिड़िया की उड़ान का वर्णन कविता कर सकती है, लेकिन कविता की उड़ान को चिड़िया नहीं जान सकती। इस प्रकार चिड़िया और कविता को एक-दूसरे से जोड़कर कविता में प्रस्तुत किया गया है।

(v) 'अभी गीला पड़ा है'- ग्रामीण घरों में आग की रसोईघर को चौका कहा जाता है। इस पंक्ति को पढ़कर पता चल रहा है कि राख से लीपे चौके की लिपाई अभी-अभी समाप्त हुई है। इस पंक्ति को यदि भोर से जोड़ा जाए, तो पता चलता है कि सूर्य के उदय होने से पहले आसमान से रात की कालिमा हटने लगी है। अतः राख के समान आसमान का रंग स्लेटी हो गया है। सुबह की ओस ने इसे गीला कर दिया है। अर्थात वातावरण में अब भी नमी विद्यमान हैं। कवि ने गाँव में सुबह सवेरे औरतों द्वारा चूल्हा लीपने का जो चित्र भोर के साथ किया है, वह इसके कारण सुंदर जान पड़ा है। कोष्ठक में लिखे शब्द वातावरण की शुद्धता, पवित्रता तथा ठंडेपन को दर्शाते हैं।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (4 X 2 = 8)

(i) विशेष लेखन की भाषा -शैली सामान्य लेखन शैली से अलग होती है। विशेष लेखन करते समय संवाददाता को संबंधित क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली तकनीकी शब्दावली का प्रयोग करना पड़ता है तथा पाठकों को भी उस शब्दावली से अवगत कराना होता है ताकि वे उसकी बात को समझ सकें जैसे शेयर की रिपोर्ट लिखते समय संसेक्स आसमान पर, रिकार्ड टूटे, संसेक्स लुढ़का आदि।

(ii) 'उल्टा पिरामिड शैली' समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय, उपयोगी और बुनियादी शैली है। इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य या सूचना (क्लाइमैक्स) पिरामिड के सबसे ऊपरी हिस्से में होती है और अंत में समापन होता है।

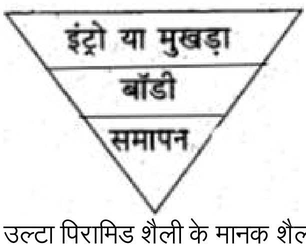

उल्टा पिरामिड शैली के मानक शैली बनने के कारण निम्नलिखित हैं-

i. अमेरिका में गृहयुद्ध के दौरान संवाददाता द्वारा खबरें टेलीग्राफ संदेशों के जरिये भेजा जाना।

ii. सेवाओं के महंगे, अनियमित और दुर्लभ होने के कारण।

(iii)सेक्शन ऑफिसर वाई.डी. पंत के अपने सहकर्मियों से संबंध बहुत कुछ किशनदा की तरह मिलता था। वे ऑफिस से निकलते वक्त किसी न किसी मनोरंजक बात से दफ़्तर के माहौल को सहज बनाने की कोशिश करते थे। या फिर कह सकते हैं कि यशोधर पंत सहयोगियों से हँसी-मजाक कर लिया करते थे, जो किशनदा की परंपरा में शामिल था। उनके कार्यालयी अनुभव निम्न प्रकार हैं-

- अधिनस्थों से दूरी परन्तु थोड़ा हास-परिहास,

- कार्यालय में समय से अधिक बैठना,
- अधिकारी के प्रति सम्मान की अपेक्षा,
- अनुशासन प्रिय विचारधारा से परिपूर्ण इत्यादि।

खंड- ग (आरोह भाग - 2 एवं वितान भाग-2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)

6. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ;
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ।
मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ

(i) **(ग)** संसार का
व्याख्या:
संसार का

(ii) **(घ)** प्रेम
व्याख्या:
प्रेम

(iii) **(ग)** स्नेह
व्याख्या:
स्नेह

(iv) **(ग)** संसार के बंधनों की
व्याख्या:
संसार के बंधनों की

(v) **(घ)** संसार का झूठा गुणगान करने वालों को
व्याख्या:
संसार का झूठा गुणगान करने वालों को

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) यह सुंदर दृश्य कविता है। कवि आकाश में उड़ते हुए बगलों की पंक्ति को देखकर तरह-तरह की कल्पनाएँ करता है। ये बगुले कजरारे बादलों के ऊपर तैरती साँझ की सफेद काया के समान लगते हैं। कवि को यह दृश्य अत्यंत सुंदर लगता है। वह इस दृश्य में अटककर रह जाता है। एक तरफ वह इस सौंदर्य से बचना चाहता है तथा दूसरी तरफ वह इसमें बँधकर रहना चाहता है।

(ii) चाहे कोई मुझे धूर्त कहे अथवा परमहंस कहे, राजपूत कहे या जुलाहा कहे, मुझे किसी की बेटी से तो बेटे का ब्याह करना नहीं है, न मैं किसी से संपर्क रखकर उसकी जाति ही बिगाडूँगा। तुलसीदास तो श्रीराम का प्रसिद्ध गुलाम है, जिसको जो रुचे सो कहो। मुझको तो माँग के खाना और मसजिद (देवालय) में सोना है, न किसी से एक लेना है, न दो देना है।

(iii) कविता को फूल के बहाने से खिलने की प्रक्रिया से जोड़ा गया है। कविता के माध्यम से हमारी भावनाएँ, हमारे विचार, हमारी कल्पनाएँ विकसित होती हैं। कविता ने फूल से ही खिलना सीखा है। कविता का जो विकास-क्रम है, उसे फूल नहीं जानता। एक निश्चित समय तक महकने के बाद फूल तो अपनी विकसित जीवन-लीला समाप्त नष्ट हो जाते हैं, लेकिन कविता का स्वरूप अनंत काल तक बना रहता है। सभी अपने अर्थ के अनुसार कविता पढ़ते, समझते और अपनी चेतना का आधार बनाते हैं। कविता वस्तुतः निरंतर युगों-युगों तक विकास पाती रहती है।

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) पतंग कविता में कवि आलोक धन्वा ने बच्चों की बाल सुलभ इच्छाओं और उमंगों का प्रकृति के साथ रागात्मक संबंधों का अत्यंत सुन्दर चित्रण करते हुए अभिव्यक्त किया है कि जब भादों मास के दौरान होने वाली घनघोर बारिश समाप्त हो जाती है तब शरद ऋतु का आगमन होता है। खरगोश की लाल- भूरी आँखों जैसी चमकीली धूप निकल आती है इसके कारण चारों ओर उज्ज्वल चमक बिखर जाती है; आकाश साफ और मुलायम हो जाता है; चारों ओर स्वच्छ वातावरण हो जाता है। हवाओं में मनोरम सुगंधित महक फैल जाती है। शरद ऋतु के आगमन से चारों ओर उत्साह एवं उमंग का वातावरण होता है, पतंगबाजी का माहौल बन जाता है। कवि ने शरद ऋतु का मानवीकरण करते हुये उसे साइकिल लेकर आते हुये चंचल बालक की तरह चित्रित किया है।

(ii) अपंग दया के नहीं, अपितु स्नेह के पात्र है। हमें उनके साथ यह सोचकर व्यवहार करना चाहिए कि यदि हम इनके स्थान पर होते, तो हमारी समाज से क्या अपेक्षा होती? हमारा व्यवहार उनके साथ सहयोगात्मक होना चाहिए। उनकी अपंगता की सीमा को हमें अपने व्यवहार से दूर करना चाहिए; जैसे-अंधा व्यक्ति सड़क पार करना चाहता है, तो हमें उसे पकड़कर सड़क पार करानी चाहिए न कि उसे ऐसे ही छोड़ देना चाहिए।

(iii) अशनि-पात से शापित उन्नत शत-शत वीर' पंक्ति में क्रांति विरोधी गर्वीले वीरों की ओर संकेत करती है जो क्रांति के वज्राघात से घायल होकर क्षत-विक्षत हो जाते हैं। बादलों की गर्जना और मूसलाधार वर्षा में बड़े-बड़े पर्वत वृक्ष क्षत-विक्षत हो जाते हैं। उसी प्रकार क्रांति की हुंकार से पूँजीपति का घन, संपत्ति तथा वैभव आदि का विनाश हो जाता है।

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

यह विडंबना की ही बात है कि इस युग में भी जातिवाद के पोषकों की कमी नहीं है। इसके पोषक कई आधारों पर इसका समर्थन करते हैं। समर्थन का एक आधार यह कहा जाता है कि आधुनिक सभ्य समाज 'कार्य-कुशलता' के लिए श्रम-विभाजन को आवश्यक मानता है, और चूँकि जाति-प्रथा भी श्रम-विभाजन का ही दूसरा रूप है इसलिए इसमें कोई बुराई नहीं है। इस तर्क के संबंध में पहली बात तो यही आपत्तिजनक है कि जाति-प्रथा श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिक-विभाजन का भी रूप लिए हुए है।

(i) **(ग)** जातिवाद को बढ़ावा देना
व्याख्या:
जातिवाद को बढ़ावा देना

(ii) **(घ)** श्रम-विभाजन
व्याख्या:
श्रम-विभाजन

(iii) **(घ)** श्रमिक विभाजन
व्याख्या:
श्रमिक विभाजन

(iv) **(घ)** कर्म
व्याख्या:
कर्म

(v) **(ख)** बाजार दर्शन
व्याख्या:
बाजार दर्शन

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) चाँद सिंह को कुश्ती में ललकारने के बाद जब लुट्टन सिंह को चाँद सिंह ने कसकर दबा लिया और गर्दन में कोहनी डालकर चित करने की कोशिश कर रहा था, तभी लुट्टन सिंह उत्साह भरने वाले ढोल के ताल को कुश्ती के दाँव पेचों के अनुसार सुनकर, समझकर एवं दाँव काटकर बाहर निकल आया। उसने चाँद सिंह को चित कर दिया इसलिए सभी के विपक्ष में होने पर भी वह विजयी हो गया।

(ii) भक्तिन की बेटी के सन्दर्भ में पंचायत द्वारा किया गया न्याय, तर्कहीन और अंधे कानून पर आधारित है। भक्तिन के जिठौत ने संपत्ति के लालच में षडयंत्र कर भोली बच्ची को धोखे से जाल में फंसाया। पंचायत ने निर्दोष लड़की की कोई बात नहीं सुनी और एक तरफ़ा फैसला देकर उसका विवाह जबरदस्ती जिठौत के निकम्मे तीतरबाज साले से कर दिया। पंचायत के अंधे कानून से दोषियों को लाभ हुआ और निर्दोष को दंड मिला।

(iii) समय बदल रहा है। अतः किसानों को भी उसके साथ बदलना पड़ रहा है। पहले किसान साग-सब्ज़ी व अन्न के उत्पादन को ही अपना सबकुछ मानता था। वे इसके जीवन के आधार थे। जीवन का आधार जीवन को सुचारू रूप से न चलाए पाएँ, तो वह किसी काम का नहीं है। आज का किसान साग-सब्ज़ी व अन्न का उत्पादन करके भी कुछ नहीं पाता है। उसका स्वयं का जीवन भी कठिनाई से चलता है। जो दूसरों का पेट पालता हो, वह स्वयं भूखा रह जाए तो यह विडंबना ही है। एक किसान स्वयं तो भूखा रह सकता है लेकिन अपने बच्चों को भूखा नहीं देख सकता। हमेशा आर्थिक तंगी में जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। साग-सब्ज़ी व अन्न उसे वह नहीं दे रहे हैं, जो उसे फूलों की खेती दे रही है। इसके लिए मेहनत कम और फल अधिक मिलता है। इसी कारण उसके बच्चे अच्छी शिक्षा, भरपूर पेट भोजन और एक अच्छी जीवन शैली जी पा रहे हैं।
एक किसान को अन्नदाता कहा जाता है। अन्न हमें जीवन देता है। किसान को रक्षक माना जाता है यदि रक्षक ही भक्षक बन जाए, तो बाकी लोगों का क्या होगा। ऐसा हर किसान वर्ग के साथ नहीं हो रहा है। इस प्रकार का नुकसान छोटे किसान भोग रहे हैं। एक संपन्नशाली किसान यदि साग-सब्ज़ी व अन्न को छोड़कर फूलों की खेती करेगा, तो देश तथा विश्व की जनता जीवित कैसी रहेगी। यह भावना उचित नहीं है।

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) यह निबंध उपभोक्तावाद एवं बाजारवाद की अंतर्वस्तु को समझाने में बेजोड़ है। लेखक बताता है कि बाजार का आकर्षण मानव मन को भटका देता है। वह उसे ऐशोआराम की वस्तुएँ खरीदने की तरह आकर्षित करता है। लेखक ने भगत जी के माध्यम से नियंत्रित खरीददारी का महत्त्व भी प्रतिपादित किया है। बाजार मनुष्य की ज़रूरतें पूरी करें। इसी में उसकी सार्थकता है, अन्यथा यह समाज में ईर्ष्या, तृष्णा, असंतोष, लूटखसोट को बढ़ावा देता है।

(ii) जीजी के तर्कों के आधार पर त्याग का स्वरूप तो अत्यंत ही सीधा, सरल व अर्थपूर्ण है। यह बात सही है कि त्याग वही सही होता है, जिससे दूसरों का हितचिंतन निहित हो। यदि हमारे पास बीस हज़ार रुपये हैं और हम उसमें से एक या दो रुपये दान भी कर देते हैं, तो यह कोई महान् काम नहीं है। जीजी के अनुसार, त्याग तो उसी वस्तु का महत्त्वपूर्ण माना जाता है, जो आपके पास भी बहुत कम मात्रा में हो और उस वस्तु की आवश्यकता आप को भी हो, सच्चा दान भी वही कहलाता है।

(iii) लेखक ने स्वतंत्रता, समता तथा भ्रातृता को आदर्श समाज के आवश्यक तत्व बताएँ हैं। लेखक ने इस लेख में अपने आदर्श समाज में स्त्रियों को सम्मिलित नहीं किया है। हम 'भ्रातृता' शब्द से सहमत नहीं है। यहाँ पर बात मात्र जाति प्रथा की हो रही है। समाज में स्त्रियों की बात नहीं की गई है। स्त्री फिर किसी भी वर्ग की क्यों नो हो, उसे लिंग के आधार पर भेदभाव का सामना करना पड़ता है। पूरे लेख में लेखक ने जाति प्रथा पर निशाना साधा है। यहाँ पर स्त्रियों की बात ही नहीं की गई है। भ्रातृत्व का अभिप्राय है -भाईचारा। भ्रातृत्व तत्व लेखक द्वारा आदर्श समाज की स्थापना हेतु बताए दुसरे तत्व समता के अर्थ में ही निहित है। हम इसके लिए दूसरा नाम बंधुत्व रखेंगे।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) यशोधर बाबू के व्यक्तित्व की तीन प्रमुख विशेषताएँ हैं-

- समय की पाबंदी
- कार्यनिष्ठा
- आदर्शवादी जीवन मूल्यों के प्रति आस्था

नई पीढ़ी के लिए इन विशेषताओं को अपनाना आवश्यक और उपयुक्त है। उसके कारण निम्न हैं-

- व्यक्तित्व के समग्र विकास के लिए
- लक्ष्य प्राप्ति के लिए
- आदर्श नागरिक बनने के लिए

(ii) मंत्री नामक अध्यापक लेखक के कक्षा अध्यापक थे। वे गणित पढ़ाते थे। वे प्रायः छड़ी का उपयोग नहीं करते थे। काम न करने वाले बच्चों की गरदन हाथ से पकड़कर उनकी पीठ पर घूसा लगाते थे। इस प्रकार से बच्चों के मन में उनकी दहशत थी, जिसके कारण शरारती लड़के भी शांत रहने लगे थे। वे पढ़ने वाले बच्चों को प्रोत्साहन देते थे। अगर किसी का सवाल गलत हो जाता तो वे उसे समझाते थे। एकाध लड़के द्वारा मूर्खता करने पर उसे वहीं सजा दे देते। उनके डर से सभी लड़के घर से पढ़ाई करके आने लगे।

(iii)सिन्धु घाटी सभ्यता के सम्बन्ध में कुछ विद्वानों का मानना है कि वह मूलतः खेतिहर और पशुपालक सभ्यता थी। यहाँ ज्वर, बाजरा और रागी की उपज होती थी। लोग काजुर, खरबूजे और अंगूर उगाते थे। झाड़ियों से बेर जमा करते थे। कपास की खेती भी होती थी। कपास को छोड़कर बाकी सबके बीज मिले हैं। इसके आलावा यहाँ के लोग पशु भी पालते थे और दूध का सही उपयोग करते थे। इस आधार पर कहा जा सकता है कि सिन्धु घाटी सभ्यता मूलतः खेतिहर और पशुपालक सभ्यता थी।